घनानंद

रीतियुगीन काव्य में घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के सिरमौर कवि हैं। इनका जन्म 1689 ई० के आस-पास हुआ और 1739 ई० में वे नादिरशाह के सैनिकों द्वारा मारे गये। ये तत्कालीन मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मीरमुंशी का काम करते थे। ये अच्छे गायक और श्रेष्ठ कवि थे। किवदंती है कि सुजान नामक नर्तकी को वे प्यार करते थे। विराग होने पर ये वृंदावन चले गये और वैष्णव होकर काव्य रचना करने लगे। सन् 1739 में जब नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब उसके सिपाहियों ने मथुरा और वृंदावन पर भी धावा बोला। बादशाह का मीरमुंशी जानकर घनानंद को भी उन्होंने पकड़ा और इनसे जर, जर, जर (तीन बार सोना, सोना, सोना) माँगा। घनानंद ने तीन मुट्ठी धूल उन्हें यह कहते हुए दी, 'रज, रज, रज' (धूल, धूल, धूल)। इस पर क्रुद्ध होकर सिपाहियों ने इनका वध कर दिया।

घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रेम की पीड़ा, मस्ती और वियोग सबकुछ है। आचार्य शुक्ल के अनुसार, ''प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ है।'' वियोग में सच्चा प्रेमी जो वेदना सहता है, उसके चित्त में जो विभिन्न तरंगे उठती हैं, उनका चित्रण घनानंद ने किया है। घनानंद वियोग दशा का चित्रण करते समय अलंकारों, रूढ़ियों का सहारा लेने नहीं दौड़ते, वे बाह्य चेष्टाओं पर भी कम ध्यान देते हैं। वे वेदना के ताप से मनोविकारों या वस्तुओं का नया आयाम, अर्थात् पहले न देखा गया उनका कोई नया रूप-पक्ष देख लेते हैं। इसे ही ध्यान में रखकर शुक्ल जी ने इन्हें 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य' का ऐसा कवि कहा जैसे कवि उनके पौने दो सौ वर्ष बाद छायावाद काल में प्रकट हुए।

घनानंद की भाषा परिष्कृत और शुद्ध ब्रजभाषा है। इनके सवैया और घनाक्षरी अत्यंत प्रसिद्ध हैं। घनानंद के प्रमुख ग्रंथ हैं - 'सुजानसागर', 'विरहलीला', 'रसकेलि बल्ली' आदि।

रीतिकाल के शास्त्रीय युग में उन्मुक्त प्रेम के स्वच्छंद पथ पर चलने वाले महान प्रेमी कवि घनानंद के दो सवैये यहाँ प्रस्तुत हैं। ये छंद उनकी रचनावली 'घनआनँद' से लिए गए हैं। प्रथम छंद में कवि जहाँ प्रेम के सीधे, सरल और निश्छल मार्ग की प्रस्तावना करता है, वहीं द्वितीय छंद में मेघ की अन्योक्ति के माध्यम से विरह-वेदना से भरे अपने हृदय की पीड़ा को अत्यंत कलात्मक रूप में अभिव्यक्ति देता है। घनानंद के इन छंदों से भाषा और अभिव्यक्ति कौशल पर उनके असाधारण अधिकार की भी अभिव्यक्ति होती है।

अति सूधो सनेह को मारग है

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झुझुकैं. कपटी जे निसाँक नहीं ।।
'घनआनँद' प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तैं दूसरौ आँक नहीं ।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

मो अँसुवानिहिं लै बरसौ

परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ ।
निधि-नीर सुधा की समान करौ सबही बिधि सज्जनता सरसौ ।।
'घनआनँद' जीवनदायक हौ कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानिहिं लै बरसौ ।।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि प्रेममार्ग को 'अति सूधो' क्यों कहता है ? इस मार्ग की विशेषता क्या है ?
2. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है ?
3. द्वितीय छंद किसे संबोधित है और क्यों ?
4. परहित के लिए ही देह कौन धारण करता है ? स्पष्ट कीजिए ।
5. कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुँचाना चाहता है और क्यों ?
6. व्याख्या करें –
   (क) यहाँ एक तैं दूसरौ आँक नहीं
   (ख) कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ

कविता के आस-पास

1. घनानंद रीतिमुक्त धारा के कवि हैं । इस धारा के अन्य कवियों की सूची अपने शिक्षक की सहायता से बनाइये और इस धारा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ भी स्पष्ट कीजिए ।
2. कवि सुजान कहकर किसे संबोधित करता है ? शिक्षक से मालूम करें ।
3. सूफी कवियों से घनानंद की क्या समानता है ? शिक्षक की सहायता से मालूम कीजिए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्द कविता में संज्ञा अथवा विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं । इनके प्रकार बताएँ –
   सूधो, मारग, नेकु, बाँक, कपटी, निसाँक, पाटी, जथारथ, जीवनदायक, पीर, हियें, बिसासी
2. कविता में प्रयुक्त अव्यय पदों का चयन करें और उनका अर्थ भी बताएँ ।
3. निम्नलिखित के कारक स्पष्ट करें –
   सनेह को मारग, प्यारे सुजान, मेरियौ पीर, हियें, अँसुवानिहिं, मो

शब्द निधि

नेकु	:	तनिक भी	परजन्य	:	बादल
सयानप	:	चतुराई	सुधा	:	अमृत
बाँक	:	टेढ़ापन	सरसौ	:	रस बरसाओ
आपन पौ	:	अहंकार, अभिमान	परसौ	:	स्पर्श करो
झझुकैं	:	झिझकते हैं	बिसासी	:	विश्वासी
निसाँक	:	शंकामुक्त	मन	:	माप-तौल का एक पैमाना
आँक	:	अंक, चिह्न	छटाँक	:	माप-तौल का एक छोटा पैमाना